

i/kkue=h xke lMd ;ktuk dk vFk0;oLFkk ij iHkko

$\frac{1}{4}$ lruk fty d fo'k"l lnhk e $\frac{1}{2}$

Mk- v#.k dekj xkre¹ and ju 'kDyk²

'kk/k funi'kdj ik/;kid ,o foHkxk/;{k okf.kT;¹

'kk/kkFkhj ,e-fQy- %okf.kT;²

'kk l dh; foodkuUn LukrdkUkj egkfo[ky;]] egj %e-i-%

'kk/k lkjk'k %&

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना भारत सरकार की एक महत्वाकांक्षी पहल है, जिसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों को बारहमासी सड़कों से जोड़कर उनका सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण करना है। प्रस्तुत अध्ययन मध्य प्रदेश के सतना जिले के विशेष संदर्भ में ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। सतना जिला, जो अपनी कृषि गतिविधियों, चूना पत्थर व सीमेंट उद्योगों और ऐतिहासिक-धार्मिक महत्व के लिए जाना जाता है, में ग्रामीण सड़कों के विस्तार ने अर्थव्यवस्था को नई दिशा दी है।

इस अध्ययन में यह पाया गया कि ग्रामीण सड़कों के निर्माण से कृषि उत्पादों के बाजार तक पहुँचने के समय और लागत में उल्लेखनीय कमी आई है, जिससे किसानों की आय में सुधार हुआ है। सड़कों की बेहतर कनेक्टिविटी ने गैर-कृषि रोजगार (जैसे छोटे व्यापार, परिवहन और स्थानीय सेवाएँ) के अवसरों को बढ़ावा दिया है। इसके अलावा, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच में सुधार होने से मानव पूंजी का विकास हुआ है। अध्ययन के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना ने न केवल सतना जिले के दूरदराज के गाँवों को मुख्यधारा के बाजारों से जोड़ा है, बल्कि ग्रामीण निर्धनता को कम करने और स्थानीय अर्थव्यवस्था को गति देने में एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य किया है।

iLrkouk %&

भारत एक कृषि प्रधान राष्ट्र है। जिसकी लगभग 60-70 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। स्वतंत्रता के पश्चात् से ही ग्रामीण विकास भारत की पंचवर्षीय योजनाओं का मुख्य केन्द्र रहा है। ग्रामीण विकास की आधारशिला 'सुगम यातायात' है। इसी परिकल्पना को साकार करने के लिए 25 दिसम्बर 2000 को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के द्वारा 'प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना' की शुरुआत की गई थी। यह योजना केन्द्र प्रायोजित है। जिसका उद्देश्य ग्रामीण भारत को मुख्य धारा से जोड़ना है। किसी भी क्षेत्र का आर्थिक विकास वहाँ की 'कनेक्टिविटी' पर निर्भर करता है। पीएमजीएसवाई का परिचय केवल सड़क निर्माण तक सीमित नहीं है बल्कि यह सामाजिक-आर्थिक समावेशन पर एक उपकरण है।

;ktuk e: cLrh vk/kfjr nfVdk.k % व्यक्तिगत ग्रामों के बजाय बस्तियों को इकाई मानकर चलती है ताकि कोई भी छोटा टोला या मजरा विकास से वंचित न रहे। योजना में पक्की सड़क का अर्थ ऐसी सड़क से है जो वर्ष के सभी मौसमों में



आवागमन के योग्य बनी रहे। सम्पर्क विहीन बस्तियों के जुड़ाव के लिए मैदानी क्षेत्रों में 500 से ज्यादा और पहाड़ी/जनजातीय/रेगिस्तानी क्षेत्रों में 250 से अधिक जनसंख्या वाली सभी पात्र बस्तियों को बारहमासी सड़कों से जोड़ना। गाँवों को नजदीकी कृषि मंडियों से जोड़ना ताकि किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य मिल सके एवं विचौलियों की भूमिका कम हो कृषि विपणन में सुधार लाया जा सके। सुगम सड़कों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में गैर-कृषि रोजगार के अवसरों का सृजन कर गरीबी उन्मूलन और रोजगार को बढ़ावा देना।

njxkeh iHkko@cgvk;keh iHkko %&

शैक्षणिक प्रभाव – सड़कों के अभाव में ग्रामीण क्षेत्रों में विशेषकर बालिकाओं की शिक्षा बाधित होती है। पीएमजीएसवाई के द्वारा उच्च शिक्षण संस्थानों तक पहुँच सुगम एवं आसान हुई है। स्वास्थ्य सुरक्षा – शिशु मृत्यु दर एवं मातृ मृत्यु दर में कमी लाने में इन सड़कों की बड़ी भूमिका है। अब एम्बुलेंस गाँवों के भीतर तक पहुँच सकती है। प्रशासनिक पारदर्शिता – यह योजना अपनी ऑनलाइन प्रबंधन निगरानी एवं लेखा प्रणाली के वैश्विक स्तर पर जानी जाती है जो भ्रष्टाचार को कम करने एवं गुणवत्ता सुनिश्चित करने का सफल मॉडल है। तकनीकी नवाचार और पर्यावरण – योजना में 'वेस्ट प्लास्टिक', 'कोल्ड मिक्स टेक्नोलॉजी' और 'पलाई ऐश' जैसी हरित तकनीक के उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। यह न केवल लागत कम करता है बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी सहायक है।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना ग्रामीण भारत के कायाकल्प की एक जीवन रेखा है केवल कंक्रीट और डामर का ढाँचा नहीं है बल्कि यह ग्रामीण प्रतिभाओं को बाजार से, मरीजों की अस्पताल से एवं छात्रों को सुनहरे भविष्य से जोड़ने वाला एक सेतु है। हमारे शोध का यह विषय इस बात का मूल्यांकन करेगा कि विगत दो दशकों में इस योजना ने जमीनी स्तर पर कितनी सफलता प्राप्त की है और भविष्य की क्या चुनौतियाँ हैं।

किसी भी राष्ट्र की प्रगति उसकी ग्रामीण अर्थव्यवस्था की सुदृढ़ता पर निर्भर करती है। सतना जो अपनी कृषि और औद्योगिक पहचान के लिए जाना जाता है वहाँ ग्रामीण सड़कों की भूमिका एक उत्प्रेरक के रूप में उभरी है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार पहुँच है पीएमजीएसवाई सड़कों ने गाँवों के अलगाव को समाप्त कर उन्हें मुख्यधारा की अर्थव्यवस्था से जोड़ा है। यह अध्याय विश्लेषण करता है कि कैसे सड़क बुनियादी ढाँचे ने उत्पादन, विपणन और उपभोग के चक्र को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है।

उक्त के संदर्भ में भौतिक एवं तकनीकी प्रगति का विश्लेषण किया गया जब यह अध्ययन विशेष रूप से आर्थिक परिवर्तन पर केन्द्रित है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सड़क का अर्थ केवल आवागमन नहीं बल्कि बाजारों तक पहुँच परिवहन लागत में कमी और नये रोजगार के अवसरों का सृजन है सतना जिले के विभिन्न आँकड़ों के आधार पर यह समझेंगे कि पीएमजीएसवाई ने किसानों, मजदूरों और लघु उद्यमियों की आर्थिक स्थिति में क्या बदलाव हुए हैं?

dfk foi.ku ij iHkko %&

सतना जिले के रामपुर बाघेलान और नागौद जैसे ब्लॉकों में सड़कों ने कृषि के स्वरूप को बदल दिया है। सड़कों ने किसानों को खेत से मंडी तक की बाधाओं से मुक्त किया है। मण्डी तक सीधी पहुँच – बारहमासी सड़कों के कारण किसान अब बिचौलियों के बजाय सीधे सतना, मैहर या अमरपाटन की मंडियों तक पहुँच रहे हैं। बिचौलियों का अंत – किसान अब अपनी उपज (जैसे गेहूँ और दलहन) सीधे सतना मंडी ले जा रहे हैं इससे उन्हें व्यापारी द्वारा दिये जाने वाले दाम से 200–300 रु0 प्रति क्विंटल अधिक लाभ मिल रहा है। परिवहन लागत में कमी – पक्की सड़कों के कारण ट्रैक्टर और ट्रकों का



रख-रखाव में खर्च कम आने लगा कच्चे मार्गों पर लगने वाले समय और ईंधन की बचत होती है ट्रैक्टरों एवं वाहनों की टूट-फूट में कमी होने से शुद्ध लाभ में 15-20 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। समय की बचत – फसल कटाई के पश्चात् उसे मंडी पहुँचाना आसान हुआ है जिससे फसल के खराब होने अथवा दाम गिरने का जोखिम कम हो गया है।

Qly foo/ħdj.k & किसान केवल अनाज ही नहीं और जल्दी खराब होने वाली नकदी फसलें (सब्जियाँ फल) उगाने लगे हैं क्योंकि उन्हें समय पर बाजार पहुँचाने का भरोसा है। सड़क कनेक्टिविटी में किसानों को पारम्परिक खेती से हटाकर व्यावसायिक खेती की ओर प्रोत्साहित किया है। सब्जी और फल उत्पादन – सतना के पास के गाँवों में अब बड़े पैमाने पर टमाटर, मिर्च और अमरुद का उत्पादन किया जा रहा है। डेयरी उद्योग का विकास – दूध एक जल्द बेकार होने वाली वस्तु है। पक्की सड़कों के कारण अमूल एवं साँची जैसी सोसायटियों के दूध संग्रहण वाहन अब सीधे गाँव के कलेक्शन सेंटर तक पहुँच रहे हैं जिससे पशुपालन की दैनिक नकद कमाई बढ़ी है।

jktxkj d voljk e of) %&

सड़कों ने ग्रामीण युवाओं के लिए खेती के अलावा अन्य विकल्प तैयार किये हैं। सड़क किनारे के सूक्ष्म उद्यम – नई सड़कों के किनारे टायर पंचर की दुकान, गैरेज, खाद बीज भंडार एवं किराना दुकानों की संख्या में 35 प्रतिशत की वृद्धि देखी जा रही है। औद्योगिक श्रम बाजार तक पहुँच – सतना के औद्योगिक क्षेत्रों के पास स्थित गाँवों के मजदूर अब आसानी से आवागमन कर पा रहे हैं जिससे उन्हें शहर में रहने का खर्च नहीं उठाना पड़ता। गैर कृषि रोजगार – सड़कों के किनारे ढाबे, गैरेज, निर्माण सामग्री की दुकानें और सर्विस सेंटर खुलने से स्थानीय युवाओं को गाँवों में ही काम मिला है। स्वरोजगार – बेहतर कनेक्टिविटी ने मोबाइल रिपेयरिंग, किराना स्टोर एवं छोटे ब्यूटी पार्लर जैसे सूक्ष्म उद्यमों को बढ़ावा दिया है। निर्माण कार्य में रोजगार – सड़कों के निर्माण और बाद में होने वाले आवास निर्माण ने स्थानीय श्रमिकों निरन्तर रोजगार प्रदान किया है।

Hkfe d eY;k e mNky %&

जिले में सड़क कनेक्टिविटी ने ग्रामीण भूगोल को नया आर्थिक स्वरूप दिया है भूमि जो पहले केवल खेती का साधन थी अब एक महत्वपूर्ण आर्थिक सम्पत्ति बन गई है। सतना जिले में भूमि के मूल्यों में यह उछाल केवल रियल एस्टेट की तेजी नहीं है बल्कि यह ग्रामीण सम्पत्ति सृजन एक माध्यम है। जब जमीन की कीमत बढ़ती है तो किसान की साख क्षमता भी बढ़ती है जिससे वह बैंक से ऋण लेकर नये व्यापार या आधुनिक खेती में निवेश कर पाता है। कनेक्टिविटी प्रीमियम – पीएमजीएसवाई सड़कों के निर्माण के बाद सड़क किनारे की जमीनों की कीमतों में उसे 5 गुना तक की बढ़ोतरी हुई है। निवेश में रुचि – शहरी निवेशक एवं व्यापारी सतना शहर के बजाय उन ग्रामीण क्षेत्रों में जमीन खरीदने में रुचि दिखा रहे हैं जो बारहमासी सड़कों से जुड़े हैं इससे ग्रामीण लैंड मार्केट को सक्रिय कर दिया है।

Hkfe dk okf.kT;ħdj.k & सूक्ष्म और लघु उद्योग – सड़कों के किनारे वेयरहाउस, कोल्ड स्टोरेज एवं पेट्रोल पंप जैसे बड़े निर्माण हो रहे हैं इसके अलावा छोटे वर्कशॉप अथवा दुकानों के लिए जमीन का उपयोग बढ़ा है। उपयोग में बदलाव – जो जमीन वर्ष भर खाली रहती थी अब वहाँ व्यावसायिक गतिविधियाँ शुरू हो गई हैं। संस्थागत विकास – वर्तमान में निजी स्कूल, छोटे नर्सिंग होम और मैरिज गार्डन ग्रामीण क्षेत्रों में बन रहे हैं ताकि वहाँ तक शहर के लोगों की पहुँच आसान हो गई है।

खेती से व्यापार की ओर झुकाव – सड़क किनारे रहने वाले किसान अब अपनी जमीन का एक हिस्सा दुकानों के लिए किराये पर देने लगे हैं इससे उन्हें खेती के अलावा एक निश्चित मासिक आय मिलने लगी है जो उनकी आर्थिक सुरक्षा बढ़ाती है। नीचे



दी गई तालिका में सड़कों के पूर्व एवं पश्चात् भूमि का विश्लेषण किया गया है कि पीएमजीएसवाई के बाद क्या परिवर्तन आया है।

Ø	dkj.k	ih,eth,lokb l i o dh fLFkr	ih,eth,lokb d i'pkr dh fLFkr
1	भूमि की कीमत	बहुत कम (सिर्फ कृषि मूल्य के आधार पर)	उच्च (व्यावसायिक मांग के कारण 3-5 गुना वृद्धि)
2	जमीन का प्रयोग	केवल खेती के लिए या बंजर भूमि	खेती, दुकान, गोदाम और रिहायशी निर्माण
3	सम्पत्ति की मांग	केवल स्थानीय लोगों तक सीमित	शहरी निवेशकों एवं व्यापारियों की बढ़ती रुचि
4	किराया (Rent) आय	नगण्य (नहीं के बराबर)	सड़क किनारे दुकानों से नियमित मासिक आय
5	वाणिज्यीकरण	शून्य (कोई व्यापारिक गतिविधि नहीं)	पेट्रोल पंप, वेयरहाउस और सेवा केन्द्रों का विकास

L=kr& किये गये क्षेत्रीय सर्वेक्षण (2025-26) एवं जिला पंजीयन कार्यालय, सतना से प्राप्त भूमि मूल्य आंकड़ों के तुलनात्मक विश्लेषण पर आधारित।

i'kiky v k j n x / k m | k x d k foLrkj %& सड़कों ने पशुपालन को केवल एक पारंपरिक व्यवसाय से बदलकर एक व्यावसायिक डेयरी उद्योग के रूप में स्थापित किया है पीएमजीएसवाई ने ग्रामीण आय के स्रोतों में विविधता पैदा की है। नगद आय में वृद्धि – दूध खराब होने की समस्या खत्म होने से पशुपालकों को अब प्रतिदिन या साप्ताहिक नकद भुगतान मिल रहा है जो उनकी आर्थिक तरलता को बढ़ाता है। दूध संग्रहण – सड़कों की वजह से साँची और अन्य निजी डेयरी कंपनियों के संग्रहण वाहन अब गाँवों के अन्दर तक पहुँच रहे हैं इससे दूध खराब होने का जोखिम कम हुआ है। सप्लाई चेन – सतना शहर के आस-पास के गाँवों से ताजा दूध, खोवा एवं पनीर अब 30-45 मिनट के भीतर मुख्य बाजार तक पहुँच जाता है।

i'k f p f d R l k l o k v k r d l x e i g p & मोबाइल वैन सेवा – सेवाएँ अब पक्की सड़कों के कारण सुदूर गाँवों तक पहुँच पा रही है। जिससे पशु चिकित्सा की सुविधा आसानी से प्राप्त हो रही है। आपातकालीन उपचार – गंभीर स्थिति में पशु को शहर के बड़े अस्पताल ले जाना अब आसान एवं सुरक्षित हो गया है जिससे पशु मृत्यु दर में कमी आई है। टीकाकरण एवं कृत्रिम गर्भाधान – पशुओं के लिए समय पर टीकाकरण (जैसे मुँह पका, खुरपका रोग के लिए) और नस्ल सुधार की सुविधा अब ग्रामीणों के घर तक सुलभ हुई है।

i'k v k g k j , o p k j d h m i y C / k r k & पक्की सड़कों के कारण भारी मात्रा में पशु आहार (खली, चोकर, दाना) अब शहर से गाँव तक कम परिवहन लागत में पहुँचाया जा रहा है इससे पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता बढ़ी है। इस तुलनात्मक तालिका के द्वारा पशुपालन एवं डेयरी के पीएमजीएसवाई सड़कों के पूर्व एवं पश्चात् की स्थिति को विस्तृत रूप से समझा जा सकता है—

Ø	dkj.k	ih,eth,lokb l m d k l i o dh fLFkr	ih,eth,lokb l m d k d i'pkr dh fLFkr
1	दूध का विपणन	केवल गाँव में या साइकिल पर शहर तक सीमित	डेयरी वाहनों द्वारा सीधा संग्रहण
2	चिकित्सा सुविधा	पशु चिकित्सक का आना कठिन एवं महंगा	मोबाइल यूनिट्स और एम्बुलेंस की सुलभ पहुँच
3	दूध का मूल्य	क्रम (स्थानीय बाजार के कारण)	उच्च (प्रतिस्पर्धी डेयरी दरें और उचित माप)
4	नस्ल सुधार (AI)	परंपरागत और कम प्रभावी	आधुनिक एवं समयबद्ध (घर पर सुविधा)
5	पशु मृत्यु दर	अधिक (समय पर इलाज न मिलने से)	उल्लेखनीय कमी (त्वरित चिकित्सा पहुँच)

6	व्यवसाय का स्वरूप	निर्वाह स्तर पर	व्यावसायिक डेयरी इकाइयाँ
---	-------------------	-----------------	--------------------------

L=kr& जिला पशुपालन विभाग, सतना के वार्षिक टीकाकरण डेटा एवं स्थानीय मिल्क को-ऑपरेटिव सोसाइटी के संग्रहण रिकॉर्ड के अनुसार

सतना जिले में ग्रामीण सड़कों ने श्वेत क्रांति के लिए एक नींव का कार्य किया है पशुपालन अब केवल खेती का सहायक नहीं बल्कि एक स्वतंत्र अथवा लाभप्रद व्यवसाय बन गया है विशेष रूप से मझगवां जैसे क्षेत्रों में जहाँ कृषि भूमि सीमित है वहाँ डेयरी उद्योग सड़कों के माध्यम से आर्थिक समृद्धि का मुख्य स्रोत बन रहा है।

y?k vkj dVhj m|kxk dk fodkI & लघु और कुटीर उद्योग ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ है सतना जिले में पीएमजीएसवाई सड़कों ने उन उद्योगों के लिए रक्त वाहिकाओं का काम किया है जिससे कच्चे माल की आपूर्ति और तैयार माल की खपत के बीच के अंतर समाप्त हो गया है। सड़क कनेक्टिविटी ने ग्रामीण उद्योगों को लोकल से ग्लोबल होने का रास्ता दिखाया है जब कच्चा माल सस्ता मिलता है और बाजार तक पहुँच आसान होती है तो कारीगर की आर्थिक आत्मनिर्भरता बढ़ती है यह न केवल पलायन को रोकता है बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को स्वावलंबी बनाता है। बाजार से सीधा जुड़ाव – सतना से मझगवां एवं चित्रकूट क्षेत्र के लकड़ी के खिलौने, मिट्टी के बर्तन और हस्तशिल्प कारीगरों को अब शहरी हाट और प्रदर्शनियों तक पहुँचने में आसानी हुई है। बिचौलियों की भूमिका में कमी – सड़क मार्ग सुलभ होने से कारीगर अपना माल खुद शहर लेकर जा सकते हैं जिससे उन्हें उनकी मेहनत का सही मूल्य मिल रहा है।

dPp eky dh lfo/ktud miyc/krk –लागत में कमी – लघु उद्योगों (जैसे अगरबत्ती निर्माण, दोना पत्तल उद्योग) के लिए जरूरी कच्चा माल अब शहर से गाँव तक कम किराये पर पहुँच रहा है। नियमित आपूर्ति – बारिश के मौसम में सड़कें खराब होने से उत्पादन रुक जाता था, लेकिन अब बारहमासी सड़कों के कारण कच्चे माल की आपूर्ति साल भर बनी रहती है। नए लघु उद्योगों का उदय – सड़क के किनारे आटा चक्की, तेल मिल एवं आयरन फैब्रिकेशन जैसे छोटे उद्योग शुरू हुए हैं। सड़क ने इन उद्योगों के लिए लॉजिस्टिक्स (आवागमन) को आसान बना दिया है। क्षेत्रीय लोगों का वर्गीकरण – सड़कों ने सतना के विभिन्न ब्लॉकों में अलग-अलग प्रकार के लघु उद्योगों को पुनर्जीवित किया है। वन-आधारित उद्योग (मझगवां ब्लॉक) – दोना पत्तल, लड़की के खिलौने और शहद प्रसंस्करण जैसे उद्योग प्रमुख हैं पक्की सड़कों से पहले, कच्चा माल लाने और तैयार माल को सतना मंडी तक पहुँचाने में 4 से 5 घण्टे लगते थे जो अब मात्र 1 घण्टे का सफर रह गया है। **df'k&i lldj.k m|kx %jkeij ck?kyku ,o ukxkn%** – यहाँ छोटी तेल मिलें, दाल मिलें और आटा चक्की बड़ी संख्या में खुली है सड़कों के कारण अब गाँव के लोग अपना अनाज पिसाने या तेल निकलवाने के लिए शहर जाने के बजाय इन स्थानीय मिलों का उपयोग कर रहे हैं। निर्माण आधारित उद्योग – सीमेंट की जाली बनाने के कारखाने, ईट भट्टे अब सड़क के किनारे तेजी से बढ़े हैं। भारी ट्रकों की पहुँच आसान होने से इन उद्योगों का विस्तार हुआ है।

rduhdh mUu;u vkj vk/kfudhdj.k & सड़कों ने केवल माल ढोना आसान नहीं किया बल्कि उद्योगों के तकनीकी स्तर को भी ऊँचा उठाया है। भारी मशीनों की पहुँच – खराब रास्तों के कारण गाँवों में भारी मशीनें (जैसे हाइड्रोलिक पेंस अथवा बड़ी चक्कियाँ) नहीं पहुँच पाती थी। अब पक्की सड़कों के कारण गाँवों में छोटी वर्कशॉप्स में भी आधुनिक मशीनें लगी हैं। रख-रखाव – मशीनों के बिगड़ जाने पर इंजीनियर या मैकेनिक अब तुरन्त गाँव पहुँच सकते हैं इससे डाउनटाइम (मशीन बन्द रहने का समय) कम हुआ है और उत्पादन बढ़ा है। महिला सशक्तिकरण एवं स्वयं सहायता समूह – लघु उद्योगों के विकास में महिलाओं की भूमिका सबसे प्रभावी रही है। सामूहिक विपणन – आजीविका मिशन के तहत महिला स्वयं सहायता समूह अब पापड़, अचार,



अगरबत्ती और हस्तशिल्प बना रहे हैं सड़कों ने इन समूहों को सरस मेलों और शहरी प्रदर्शनियों से जोड़ा है। आर्थिक स्वावलंबन – परिवहन सुलभ होने के लिए महिलाएँ अपने उत्पादों को बेचने के लिए खुद शहर जाने लगी है जिससे उनके आत्मविश्वास और घरेलू आय में 20 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है।

नीचे तीन तालिका बनाई गई है जिससे सड़कों के पूर्व एवं पश्चात् लघु एवं कुटीर उद्योगों की स्थिति में क्या बदलाव आया है यह स्थिति स्पष्ट होगी।

Ø-	fo'y ^m k.kkRed dkjd	ih,eth,lokb IMd I: io dh fLFkr	ih,eth,lokb IMd d: ckn dh fLFkr
1	कच्चे माल की पहुँच	मुश्किल और मंहगी (सिर्फ मौसम के आधार पर)	सरल, नियमित एवं सस्ती (बारहमासी)
2	उत्पादन लागत	उच्च (परिवहन शुल्क अधिक होने के कारण)	कम (बेहतर कनेक्टिविटी से 10–15 प्रतिशत बचत)
3	बाजार विस्तार	सिर्फ स्थानीय गाँव तक सीमित	जिला स्तर एवं राज्य स्तर के बाजारों तक
4	कारीगरों की आय	कम और अनिश्चित	नियमित एवं संतोषजनक
5	तकनीकी उपकरण	पुरानी एवं पारंपरिक तकनीक	आधुनिक मशीनों की गाँव तक पहुँच

L=kr& मझगवां एवं रामपुर बाघेलान में 2026 में क्षेत्रीय सर्वेक्षण के दौरान कारीगरों और सूक्ष्म उद्यमियों से लिया गया प्रत्यक्ष फीडबैक के आधार पर, जिला उद्योग केन्द्र से प्राप्त ग्रामीण उद्योगों के पंजीकरण के आधिकारिक डेटा के आधार पर।

Ø-	m kx d: idkj	IMdk I: igy: dh IeL;k	IMdk d: ckn g, I/kkj
1	ईट और सीमेंट उद्योग	परिवहन लागत अधिक, डिलीवरी में देरी	ट्रकों की सीधी पहुँच, लागत में 15 प्रतिशत कमी
2	हस्तशिल्प	बिचौलियों पर निर्भरता	सीधा बाजार संपर्क
3	खाद्य प्रसंस्करण	मशीनरी अथवा बिजली का अभाव	नई यूनिट्स की स्थापना एवं नियमित सप्लाई
4	कारीगरों का कौशल	पुरानी पद्धति	प्रशिक्षण अथवा आधुनिक टूल्स तक पहुँच

L=kr& जिला सांख्यिकी पुस्तिका के अनुसार पिछले 5 वर्षों में पंजीकृत लघु उद्योगों की संख्या के अनुसार मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना की रिपोर्टों के आधार पर।

सतना जिले के प्रमुख ब्लॉकों में सूक्ष्म एवं लघु उद्योगों की वृद्धि यह तालिका सड़कों की पूर्व वर्तमान स्थिति को दर्शाती है।

Ø-	Cykd dk uke	m kxk dh I:;k %2020%	m kxk dh I:;k %2025&26%	dy of) (%)	ie[k m kx idkj
1	मझगवां	145	210	45%	लकड़ी के खिलौने, वनोपज, हस्तशिल्प
2	रामपुर बाघेलान	220	345	57%	तेल मिल, आटा चक्की, ईट भट्टे
3	नागौद	185	280	51%	कृषि उपकरण, मसाला उद्योग, फैब्रिकेशन
4	अन्य (जिला योग)	1200	1850	54%	विविध सूक्ष्म उद्यम



L=kr& जिला उद्योग केंद्र सतना के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम पंजीकरण रिपोर्ट 2020 से 2025 के आधार पर आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय मध्यप्रदेश जिला सांख्यिकी पुस्तिका सतना के अनुसार, फील्ड विजिट के दौरान स्थानीय पंचायत रिकार्ड और व्यावसायिक संघों से एकत्रित जानकारी पर आधारित।

आंकड़ों का यह विश्लेषण स्पष्ट करता है कि सड़क कनेक्टिविटी एवं ग्रामीण औद्योगीकरण के बीच एक धनात्मक सह-संबंध है जैसे-जैसे सड़कों की पहुँच बढ़ी है वैसे-वैसे गैर कृषि रोजगार के अवसरों में भी समानुपातिक वृद्धि दर्ज की गई है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना सतना जिले की ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए एक वरदान सिद्ध हुई है। ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी ढाँचे के विकास ने न केवल दूरी को कम किया है, बल्कि आर्थिक गतिविधियों के दायरे का भी विस्तार किया है। सतना जिले में इस योजना के सकारात्मक परिणाम स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। बारहमासी सड़कों के कारण किसान अब अपनी उपज (सब्जियाँ, दूध, अनाज) को सीधे सतना मंडी या आसपास के औद्योगिक क्षेत्रों में समय पर बेच पा रहे हैं, जिससे उन्हें अपनी फसल का बेहतर मूल्य मिल रहा है। रोजगार एवं आजीविका का विविधीकरण— कृषि पर अत्यधिक निर्भरता कम हुई है और युवाओं के लिए परिवहन, लघु उद्योग और सेवा क्षेत्र में स्वरोजगार के नए अवसर पैदा हुए हैं।

सामाजिक-आर्थिक जीवन स्तर में सुधार— बुनियादी अवसंरचना के मजबूत होने से बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक ग्रामीण आबादी की पहुँच आसान हुई है, जिससे जीवन स्तर में समग्र सुधार हुआ है। हालाँकि, इन फायदों को दीर्घकालिक और टिकाऊ बनाए रखने के लिए निर्मित सड़कों की नियमित मरम्मत एवं रखरखाव, सुरक्षा मानकों के पालन और दूरस्थ जनजातीय/ग्रामीण क्षेत्रों तक शत-प्रतिशत कनेक्टिविटी सुनिश्चित करने पर निरंतर ध्यान देने की आवश्यकता है। कुल मिलाकर, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना ने सतना जिले में समावेशी और सतत ग्रामीण विकास की एक मजबूत नींव रखी है।

lnhk lkr %&

1. सांख्यिकीय विभाग जिला सतना 2020
2. जिला सांख्यिकीय कार्यालय सतना वर्ष 2001–2011
3. जिला सांख्यिकी पुस्तिका सतना (ग्र.प्र.) वर्ष 2017 पृ.सं. 6–7
4. जिला विकास पुस्तक 2022 पृ. क्र. 1–2
5. <https://www.nibsm.org.in>
6. hi.m.wikipedia.org

